IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
बिहार शोध समागम BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 4, October-December, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

आत्मनिर्भर भारतः अवसर, सफलता और चुनौतियाँ

डॉ0 कमलकान्त
सहायक आचार्य
शिक्षक-शिक्षा विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज
सिविल लाइन्स, कानपुर नगर

सांराश–

आत्मनिर्भर होना हर व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का सपना होता है। किसी भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की असल शक्ति उसकी आत्मनिर्भरता में हीं है। एक आत्मनिर्भर राष्ट्र ही अपने राष्ट्र को सर्वापरि बना सकता है। आत्मनिर्भर होने का मतलब है कि आपके पास जो स्वयं का हुनर है उसके माध्यम से एक छोटे स्तर पर खुद को आगे की ओर बढ़ाना है या फिर बड़े स्तर पर अपने परिवार, समाज और देश के लिए कुछ करना। यदि हम खुद को आत्मनिर्भर बनाकर अपने परिवार का भरण–पोषण कर सकेंगे तो इसके साथ ही साथ हम निश्चित तौर पर अपने राष्ट्र के विकास मे भी अभूतपूर्ण योगदान दे सकेगें। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी का भी यह सपना था कि भारत स्वदेशी चीजों को अपना कर अपनी एवं अपने देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में अग्रसर रहें।

प्रस्तावना–

आत्मनिर्भर भारत का अर्थ है स्वयं पर निर्भर होना यानि खुद को किसी और पर आश्रित न करना। पिछले एक साल से कोरोना महामारी किन मुश्किलों से गुजरा है, महामारी देखते हुर भारत प्राचीन काल से ही आत्मनिर्भर है। भारत की कला और संस्कृ ति को देखते हुए यह बात स्पष्ट होती हैं। ये और बात है कि मानसिक, सामाजिक, राजनीतिक त्रुटियों के कारण ये कभी उभर नहीं पाया।

''आत्मनिर्भर'' शब्द कोई नया नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर उद्योग के द्वारा बनाये गये सामानों और उससे आए हुए पैसों से परिवार का खर्च चलाने को ही आत्मनिर्भर कहा जाता है। कुटीर उद्योग या घर में बनाये गये सामानों को अपने आस–पास के बाजारों मे ही बेचा जाता है। तो अन्य किसी का सामान अच्छी गुणवत्ता का होता है। तो अन्य जगहों पर भी इसकी मांग होती है। जो समान घरो में हमारे जीवन के उपयोग के लिए बनाया जाता है। उसे बोलचाल की भाषा में 'लोकल' सामग्री कहते है। पर सत्य तो यही है कि ये आत्मनिर्भता का ही एक महत्वपूर्ण प्रारूप् है। कुटीर उद्योग सामाग्री, मत्स्य पालन इत्यादि। ''आत्मनिर्भर भारत'' के ही कुछ प्रमुख उदाहरण है।

आत्मनिर्भर की श्रेणी मे खेती, मत्स्य पालन, आंगनबाड़ी, स्वयं सहायता समूह जैसे कार्य हमें आत्मनिर्भर की श्रेणी में लाकर खड़ा करती हैं। इस प्रकार से हम अपने परिवार से समाज, समाज से कस्बा, कस्बा से गांव, गाव से शहर, एक दुसरे से जोड़कर देखे तो इस प्रकार पूरे राष्ट्र के विकास में ही योगदान देते है। हमे सहजता से मिल जाने वाले प्राकृतिक संसाधनों और कच्चे मालो के द्वारा वस्तुओं का निर्माण करके अपने आस–पास के बाजारों में इसे बेच सकते है। हम सब मिलकर एक आत्मनिर्भर राष्ट्र के निर्माण के सपने को मजबूत बनाने में अपना अहम सहयोग दे सकते है।

मुख्य बिन्दुः अवसर, चुनौतियाँ, आत्मनिर्भर बनाने में मददगार स्तंभ

अवसर–

अगर किसी का सपना होता है कि आत्मनिर्भर बने तो वह सबसे अच्छा गुण कहा जा सकता है। महात्मा बुद्ध भी तो अपने ज्ञान के सूत्रों मे से एक सूत्र इस संसार मे दे गये है। अप्प दीपो भवः अर्थात अपना प्रकाश स्वयं बनो और एक प्रकाश स्तंभ की तरह हमेशा जगमगाते रहो। पूरे विश्व में केवल भारत ही ऐसा देश है जहां सबसे अधिक प्राकृतिक साधन पाये जाते है।, जो कि बिना किसी देश की मदद से जीवन से लेकर राष्ट्रनिर्माण की वस्तुएं बना सकता है और आत्मनिर्भर के सपने को पूरी तरह से साकार कर सकता है।

कोरोना महामारी के दौर में यहाँ हमने पीपीई किट, वेल्टिलेटर, सेनेटाइजर एन–95 मास्क और इस आपदा मे संजीवनी साबित हो चुकी वैक्सीन का निर्माण भी अपने देश में ही शुरू कर दिया है। यही नहीं स्वदेश में निर्मित वैक्सीन को कई देशो (छोटे–बड़े) को निर्यात किया है। इन सभी चीजों का निर्माण भारत में करना ही ये दर्शाता है कि हम वाकई आत्मनिर्भर भारत के सपने को सच कर सकते है। इनके उत्पादन से हमे अन्य देशों की मदद भी नहीं लेनी पड़ रही हैं। और भारत आत्मनिर्भता की और आगे कदम बढ़ा रहा है।

चुनौतियाँ–

कोरोना वैश्विक महामारी के कारण पूरी तरह से अस्त–व्यस्त और परास्त हो चुकी दुनिया की अर्थव्यवस्था में जान फूंकने की जरूरत अब आन पड़ी है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी का लोकल के लिये वोकल बनकर उसे ग्लोबल बनाने का सपना भी

चुनौतियों को अवसर में बदलने का मूलमंत्र साबित हो रहा है। पर यह जितना सहज दिख रहा है, उतना ही जटिल भी है। भारत के आत्मनिर्भर बनने की राह में अनेक काँटें और चुनौतियां है। सरकार की सबसे पहले उन चुनौतियों से दो–चार होना पड़ेगा तभी इस समाज में भूमंडलीकरण के इस दौरान में हम लोकल स्वीकार्यता और व्यापकता को धरातल पर यथार्थ गौरतलब है कि हमारे देश में अनेक उपकरण मशीनें और कच्चा माल आज भी विदेशों से आयात करना पड़ता है। अगर आयात की जाने वाली मशीनों को यहीं पर बनाया जाता है। तो यहा बनाने वाले उत्पादों की लागत बढ़ जायेगीं। दूसरी ओर, महामारी के चलते देश का प्रवासी मजदूर बड़े शहरों को छोड़कर अपनी गांवों को चले गये है। ऐसे में अनेक उद्योग कल कारखाने बंद हो गए हैं।

भारत के आत्मनिर्भर बनने के सपने को साकार करने में कुछ और भी निम्न चुनौतियां हैं जिसे समझना भी जरूरी है–लागत और गुणवत्ताः भारत के स्वयं के उत्पादों में एक समस्या है जो सबसे बड़ी है। भारत के समान निर्माण मे यह देखना जरूरी है कि क्या वास्तव में भारत में बने उत्पादों की गुणवत्ता अच्छी है और उनकी लागत कम हो सकती है।

आर्थिक समस्या–

भारत में जनसंख्या और गरीबी दोनों ही एक साथ तेज गति से बढ़ रही है। किसी भी नये उत्पादन के लिए सबसे पहली आवश्यकता होती है। पूँजी हालाकि भारत ने कई ऐसी योजना है जो किसी भी नये उत्पादन या व्यवसाय को चालू करने के लिए लोन मुहैया कराती है। परन्तु शुरूआती समय में देश को आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ सकता है ताकि हमारी जनसंख्या का ठीक तरह से भरण–पोषण करने मे हम असमर्थ रहें हैं। हम अब तक अपनी जनसंख्या के लिए बुनियादी जरूरतों को पूरी करने के लिए ही जूझ रहे हैं।

आधारभूत ढांचा–

कई आर्थिक व व्यापार विशेषज्ञों की माने तो उनके अनुसार चीन से निकलने वाली अधिकांश कंपनियों के भारत में न आने का एक सबसे बड़ा कारण ही भारतीय औद्योगिक क्षेत्र (विशेषकर तकनीकी के संदर्भ में) में एक मजबूत आधार ढ़ाचे के अभाव को माना जाता है हमारी बहुत भारी जनसंख्या जो हमारी कमजोरी हो गयी है। अन्य देशों ने इसमें अवसर देख लिया है और बाहर की वस्तुओं का आयात ज्यादा मात्रा में हो रहा है। आत्मनिर्भर भारत बनने के लिए हमें इस समस्या को भी सुधारने की जरूरत है।

भारत को आत्मानिर्भर बनाने में मददगार स्तंभ–

अर्थव्यवस्था–भारत की मौजूदा अर्थव्यवस्था एक मिश्रित प्रकार की अर्थव्यवस्था है जिसमें परिवर्तन करना संभव है। अर्थव्यवस्था ही एक ऐसा साधन है जो भारत को आत्मनिर्भर बनने की ओर मोड़ सकती है।

तकनीकी–भारत में तकनीकी बहुत हद तक विकसित है और इसी तकनीक के चलते भारत की तकनीकी इसी का एक मुख्य अंग है जो भारत को आत्मनिर्भर बनाएगा।

इन्फ्रास्ट्रक्चर–भारत का इन्फ्रास्ट्रक्चर इतना मजबूत है कि यह भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए मदद करेगा।

मांग–भारत में कच्चे माल की मांग इतनी ज्यादा बढ़ रही है कि हमें पड़ोसी देशों पर निर्भर रहना पड़ता है। अगर हम कच्चे माल का निर्माण भारत में करते है तो उस स्थिति में भारत आत्मनिर्भर की ओर अग्रसर हो सकेगा।

बढ़ती जनसंख्या–भारत की जनसंख्या भी जंगल में आग की तरह फैल रही है। इस पर नियंत्रण भी जरूरी है। आत्मनिर्भर बनने के बाद किसी के आगे हाथ नही फैलाना पड़ेगा।

भारत में हमारे दैनिक जीवन में उपयोग में आने वाली वस्तुओं का आयात चीन या अन्य पड़ोसी देशों से किया जाता रहा है। अगर भारत का यह आत्मनिर्भर बनने का सपना पूरा होता है तो भारत का किसी अन्य देश के आगे हाथ नही फैलाना पडेगा और भारत स्वयं ऐसी वस्तुओं का निर्माण करने लगेगा।

देशी उद्योग में बढ़ोत्तरी–भारत में आत्मनिर्भर बनने से भारत में कई तरह की वस्तुओं का निर्माण होगा और भारत में उद्योग भी बढेगे भारत उन वस्तुओं को विदेश में भी भेज सकेगा और इससे भारत की अर्थव्यस्था मजबूत होगी।

रोजगार के अवसर–आत्मनिर्भर से भारत में देशी और घरेलू उद्योग बढ़ेगे जिस वजह से भारत में रोजगार के अवसर भी बढेगे और देश के संक्षम लोगो को इससे रोजगार भी मिलेगा इससे देश के आर्थिक हालात भी सुधर सकेंगे।

गरीबी से मुक्त होगा–देश मे आत्मनिर्भरता से उद्योगों के साथ–साथ युवाओं को रोजगार के अवसर भी मिलेगे इससे देश में गरीबी निश्चित रूप से कम होगी।

पैसों की कमाई–भारत के आत्मनिर्भर बनने से देश में व्यापार के अवसर तो बढ़ेगे ही साथ ही इस देश को अच्छी कमाई भी होगी जिससे देश की अर्थव्यस्था भी मजबूत होगी ।

आयात की जगह निर्यात बढ़ेगा–भारत के आत्मनिर्भर बनने से पहले देश अबतक जिन वस्तुओं का आयात करता था अब यदि भारत उसका निर्यात करने लगेगा तो देश में विदेशी मुद्रा का भंडार भी बढ़ेगा।

"आपदा के समय संकट मोचक बनेगा खजाना।"

आत्मनिर्भर बनने से भारत में रोजगार बढ़ेगा और देश की अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी जिससे संकट के समय वह धन देश की रक्षार्थ काम आ सकेगा आखिर देश का खजाना तो देशवासियों की ही खून पसीने की कमाई और ये देशावासियों को ही

सरकार द्वारा विभिन्न विकास योजनाओं के रूप में लौटाया जाता है।

एक सफल व्यक्ति की बहुत बड़ी पहचान होती है कि वह अपने कौशल को बढ़ाने का कोई भी मौका जाने नहीं देता और सदैव नया मौका ढूँढता रहता है। जिन युवाओं में कौशल के प्रति अगर आकर्षण नहीं है, कुछ नया सीखने की ललक नही है तो उसका जीवन ठहर सा जायेगा, जीवन व व्यक्तित्व को बोझ सा बना देगा खुद के लिए ही नहीं अपने जीवन व व्यक्तित्व को नाम सा बना देगा सर के लिए ही नहीं अपने स्वजनों के लिए भी बोझ बन जाएगा। अतः अब वह समय आ गया है जब विभिन्न विधाओं में पारंगत होकर महाभारत के अर्जुन की भाँति लक्ष्य भेदन की दिशा में आगे बढ़ें। कौशल के प्रति आकर्षण जीवन जीने की वास्ताविक ताकत देता है, जीने का उत्साह देता है। ज्ञान व कौशल केवल रोजी–रोटी और ये कमाने का जरिया मात्र नहीं है। जीने के लिए कौशल हमारी प्रेरणा बनता है। यह हमे नवीन उर्जा देने का काम करती है।

अतः अंत में कहा जा सकता है कि हम जिस राष्ट्र की मिट्टी में पले बढ़े हुए जिस राष्ट्र का हमने नमक खाया है। क्यों न उस राष्ट्र का कर्ज हम स्वदेशी वस्तुओं को अपनाकर भारत को विकासशील नही बल्कि विकसित देशों में शामिल करें। तभी हम पूरी तरह से कह पाऐंगे कि मैं भारत का निवासी हूँ। एवं आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, मानसिक दृष्टिकोण से स्वतंत्र देश का आत्मनिर्भर नागरिक हूँ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. To spur wrowth : nirmala sitaraman or pm modi's atamanirbhar bharat ambiyan"
2. atamanirbhar bharat ambiyan not self containment pm assures globel investors
3. Indigenous defence production must for india's self-reliance: pm narendra modi